>

Title: Regarding alround development of Adivasis in the country.

श्रीमती ज्योति धुर्वे (बेतूल): महोदय, आज मैं आदिवासियों के निचले जीवन पर प्रकाश डालना चाहती हूं। आज निश्चित ही आदिवासी समाज बहुत ही पिछड़ा हुआ है। उस निचले ग्राम में जहां जंगल, पहाड़, हैं, वह ऐसी विपरीत स्थिति में रहता है। देश की आजादी में मेरे आदिवासी भाई चाहे बिरसा मुंडा हों, या रानी दुर्गावती हों, या कोल, भील हों ने अपना विशेष योगदान दिया। आज इस आदिवासी बहुल समाज की स्थिति बहुत ही गंभीर और दयनीय है। उनका जीवन वन पर स्थित होता है, लेकिन वन में ऐसी कोई भूमि नहीं होती है, जिससे वह अपना जीवन-यापन कर सके। निश्चित ही वह उस मउवे पर आधारित हो जाता है और उससे वह जिस सेवन को करता है, उससे उसका जीवन बहुत ही गंभीर और दयनीय हालात में जा गिरता है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूं कि आज आजादी के 60 वर्षों बाद भी आदिवासियों का जीवन नहीं सुधरा है। न ही उन्हें जीने के लिए एक सफल, एक स्वस्थ भोजन, न्यूट्रिस भोजन की जो आवश्यकता है, वह नहीं मिल पा रहा है। शिक्षा के रूप में देखा जाए तो आज की शिक्षा उन्हें जंगलों में प्राप्त नहीं हो रही है। स्वास्थ्य सुविधा की बात करें तो न तो उन्हें स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध है, न ही भारत सरकार के द्वारा उन वन ग्रामों में विद्युत की सुविधा उपलब्ध है। सौर ऊर्जा के माध्यम से वह किसी रूप में बिजली को देखता है, लेकिन जिस विद्युतीकरण के द्वारा वह किसान अनाज की उपज कर सके, इसमें भी वह सफल नहीं होता है। मैं चाहती हूं कि आज हर जिले में सात तहसीलें होती हैं। उन सात तहसीलों में ऐसे 90 से 95 वन ग्राम आते हैं और उनमें आदिवासी लोग रहते हैं। आज इन आदिवासियों की हालत देश में बहुत गंभीर है। देश के हर दुरांचल वनों में आज आदिवासियों की जो स्थिति है, वह आपसे छिपी हुई नहीं है।

सभापति महोदय : आप क्या चाहती हैं?

श्रीमती ज्योति धुर्वे : मैं चाहती हूं कि आदिवासियों के जीवन में सुधार हो। अभी जिन बातों की चर्चा हो रही थी, आज भी वन भूमि उन्हें आरक्षित नहीं है। आने वाले समय में मुझे लगता है कि उन्हें वन से भी निकाल दिया जाएगा। ऐसी स्थिति में वह किस मजदूरी की दशा में जिएगा, इसकी चिंता मुझे तो है, लेकिन मैं चाहूंगी कि सरकार भी इसकी चिंता करे। उनके आने वाले जीवन को सफल करने के लिए ऐसी विभिन्न योजनाओं को, जो आज सफल नहीं हो रही हैं, उनके लिए ऐसे कठोर नियम बनाएं, जिससे उन योजनाओं का सफल क्रियान्वयन हो। मैं यही चाहती हूं।